वेदान्त आश्रम की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २३ जनवरी - २०२३ प्रकाशन - ०१

वेदान्त पीयूष

वेदान्त मिशन की मासिक हिन्दी मासिक पत्रिका

फरवरी 2023 / वर्ष 23 / प्रकाशन 02

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९५०, सुदामा नगर, इन्दौर - ४५२००९; मध्यप्रदेश

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

विषय सूचि

04 श्लोक – आत्मबोध

06 सन्देश – पूज्य गुरुजी

10 लघुवाक्यवृत्ति (ग्रन्थ)

14 पुरुष सूक्तम् – पू. गुरुदेव

18 जीवन्मुक्त (स्वामी तपोवन)

20 श्री शत्रुघ्न चरित्र

22 कथा – गयासुर

26 समाचार (मिशन / आश्रम)

41 कार्यक्रम (मिशन / आश्रम)

43 समाचार (इण्टरनेट / लिंक)

ॐ
सदाशिवसमारम्भाम्
शंकराचार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम्
वन्दे गुरु परम्पराम्

देहेन्द्रियमनोबुद्धि प्रकृतिभ्यो विलक्षणम् ।
तद्वृत्तिसाक्षिणं विद्याद् आत्मानं राजवत्सदा ॥

(आत्मबोध श्लोक 18)

आत्मा को सदैव प्रकृतिके कार्य शरीर, इन्द्रियां, मन, बुद्धि से विलक्षण सब के साक्षी एवं राजा की भांति ही जानें।

पूज्य गुरुजी का सन्देश

वासना से मुक्ति

वासना से मुक्ति

अधिकतर मनुष्य वासना के वशीभूत होकर जीता है। वासना अर्थात् किसी परिस्थिति वा अनुभूति के पुनरावर्तन की प्रबल इच्छा। वर्तमान में संवेदना, सजगता का अभाव ही वासना का जनक है। वासना जितनी हद तक हावि होती है, उतने ही हम शिथिल व संवेदनाविहीन होते हैं। मानों हम सो रहे है। उस परिस्थिति को समग्रता से जीने के अभाव में असंतुष्टि रह जाती है और उसके पुनरावर्तन की इच्छा होती है।

यद्यपि वर्तमान में संवेदना और विवेक का अभाव वासना का जनक होता है, किन्तु यह भी अनुभव में आता है कि किसी परिस्थिति को पूर्ण उपलब्धता, संवेदना के साथ जीने पर उसमें एक अलौकिक सुख की अनुभूति होती है, यह अनुभूति हमारे अन्दर गहरी छाप छोड़ जाती है और यही उस अनुभूति को दोहराने को विवश करती है।

उससे यह दिखता है कि इन दोनों परिस्थिति में कोई समान घटक है, जो वासना संचित करने का हेतु बनता है और पुरानी वासना के अनुरूप जीने को विवश करता है। उस पर विचार करने से ही वासना से मुक्ति का समाधान मिल सकता है।

हमें यह देखना होगा कि वर्तमान में उपलब्धता से जीने में कौन सी बाधा है? उसका कारण अधिकतर फलाकांक्षी होकर, उसकी चिन्ता से युक्त होकर जीना है। फलाकांक्षा का हेतु अपने बारे में मन की कण्डिश्निंग तथा विषयों के प्रति महत्व, रागादि होते है।

हम फलाकांक्षी होकर बाहर किसी न किसी विषय से तृप्त होना चाहते है। जब किसी परिस्थिति व भोग में सुख की अनुभूति हुई तो उसमें महत्वबुद्धि स्थापित होकर उसे सुख का स्रोत मान लेते हैं। इन दोनों के पीछे अपने बारे में सुख से रहित, अतृप्त, अपूर्ण होने की

वासना से मुक्ति

ही धारणा होती है। इस अपने बारे में तथा जगत के बारे में मोहात्मक दृष्टि ही हमें दीनता से प्रेरित करती है। जब भी हम ऐसे भोक्तृत्व से प्रेरित होते है तो यह हमारे मन में कण्डिशनंग उत्पन्न करता है। मन की वासनाएं भूतकाल में घसिटती है तो फलासक्ति भविष्य की चिन्ता से ग्रस्त करती है। इन कारणों की वजह से ही वर्तमान को समग्रता से जी नहीं पाते, कर्म में समग्रता नहीं हो पाती है। समग्रता के अभाव में न तो कर्म की संतुष्टि होती है, और न ही इष्टफल की सिद्धि। परिणामस्वरूप निरुत्साहित व पश्चात्ताप से युक्त होकर अवसाद की गर्त में डूबे रहते है। वासना जितनी हद तक हावि होती है, उतनी ही शिथिलता व संवेदनाविहीनता होती है।

आध्यात्मिक धरातल पर भी उसके नुकसान होते है। आसक्ति, अभिमान, अपेक्षा समत्व को खण्डित करते है। समत्व का अभाव होना ही ज्ञान की अनुपलब्धता और भावना में बहना है। हम आगामी कर्म के हेतुरूप वासना का निर्माण करते जाते है। हमारी समस्त उर्जा चिन्ता, पश्चात्ताप आदि में व्यय हो जाती है, और परिस्थिति हावि होने लगती है। हम आत्मग्लानि से युक्त, आत्मबलविहीन व स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

ऐसे में श्रवणादि से प्राप्त किया हुआ ज्ञान उपलब्ध नहीं हो पाता और ज्ञान को जी नहीं पाते। हमारे ही व्यक्तित्व में एक दिव्य ज्ञान से युक्त व्यक्ति है और दूसरा असमर्थ, हीनता से युक्त आयाम है। इन दो के मध्य में संघर्ष होकर दिव्यज्ञान की परम्परा के प्रति श्रद्धा प्रभावित होने लगती है। परिणामस्वरूप हम जीवन के परं लक्ष्य की सम्भावना से वंचित हो जाते है।

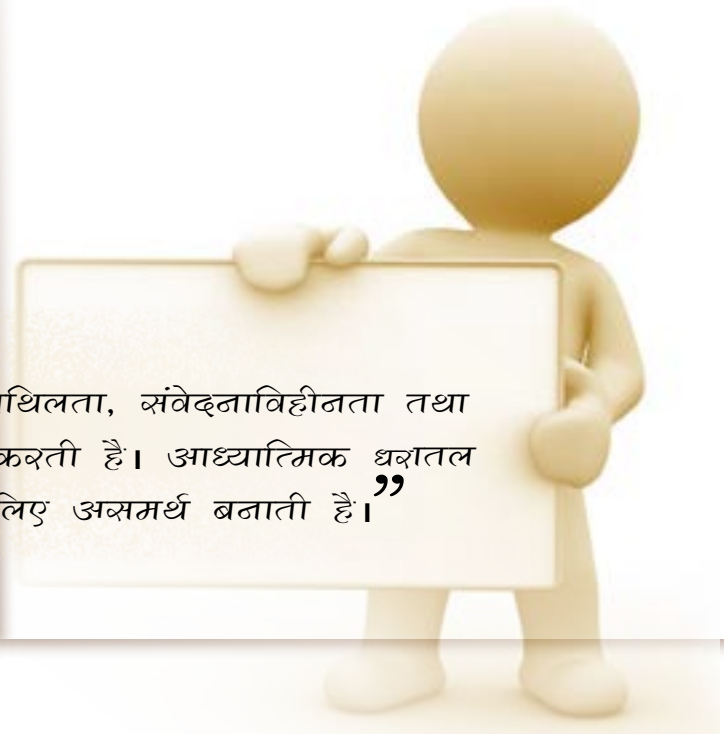

"वासना व्यवहार में शिथिलता, संवेदनाविहीनता तथा समग्रता का अभाव उत्पन्न करती है। आध्यात्मिक धरातल पर ज्ञान को जीने के लिए असमर्थ बनाती है।"

वासना से मुक्ति

इन व्यवहार और अध्यात्म धरातल के दोष को गहराई से महसूस करने से तथा वर्तमान में समग्रता से जीने का महत्व स्थापित होने पर उन दोष से मुक्ति की और समग्रता से जीने की प्रेरणा होती है। पुरानी कण्डिश्निंग से मुक्त, पूर्ण उपलब्धता, समग्रता व बुद्धिमत्ता से जीने को ही कर्मयोग कहते है। हमारी बुद्धिमत्ता उसीमें है कि फलाकांक्षा आदि के पीछे उन सब के हेतुभूत अपने बारे में विद्यमान धारणा की गहराई तक पहुंचें। जिस अपूर्णताकी धारणा की वजह से समग्रता से जी नहीं पा रहे है, वह किसी भी दृष्टि से युक्तिसंगत वा प्रामाणिक नहीं है। यह जानते हुए तद्विपरीत पूर्णता की श्रद्धा को दृढ़ करके जीएं।

यही वास्तविक समग्र जीवन की कला है। अपने अनुभवों और अनुभवी से शिक्षा लेकर वर्तमान परिस्थिति में, स्वयं उपलब्धता से सुन्दरतम तरीके से जीना है, जिससे कि कोई अवशेष न बचें। ऐसा मन ही समाहित हो पाता है और उसके कर्म भी अपूर्व, प्रेरक, मन को प्रसन्न करनेवाले तथा सब के लिए कल्याणकर होते है। यही इष्टफल की सिद्धि करानेवाला होता है। भूत-भावि की चिन्ता से मुक्त समग्र जीवन की कला ही अन्तःशुद्धि का पर्याय है।

परिस्थिति में निरपेक्ष होकर जीना ही पूर्णता का पर्याय है। इससे पुरानी वासनाएं शिथिल होती जाती है और नई वासना का संचय नहीं होता है। यही अन्तःकरण शुद्धि, मन की शान्ति, ज्ञाननिष्ठा का हेतु है। अतः पूर्णता की श्रद्धा से युक्त, समग्रता से जीने की कला का महत्व समझना चाहिए। यही अभ्युदय, निःश्रेयस की सिद्धि का द्वार है।

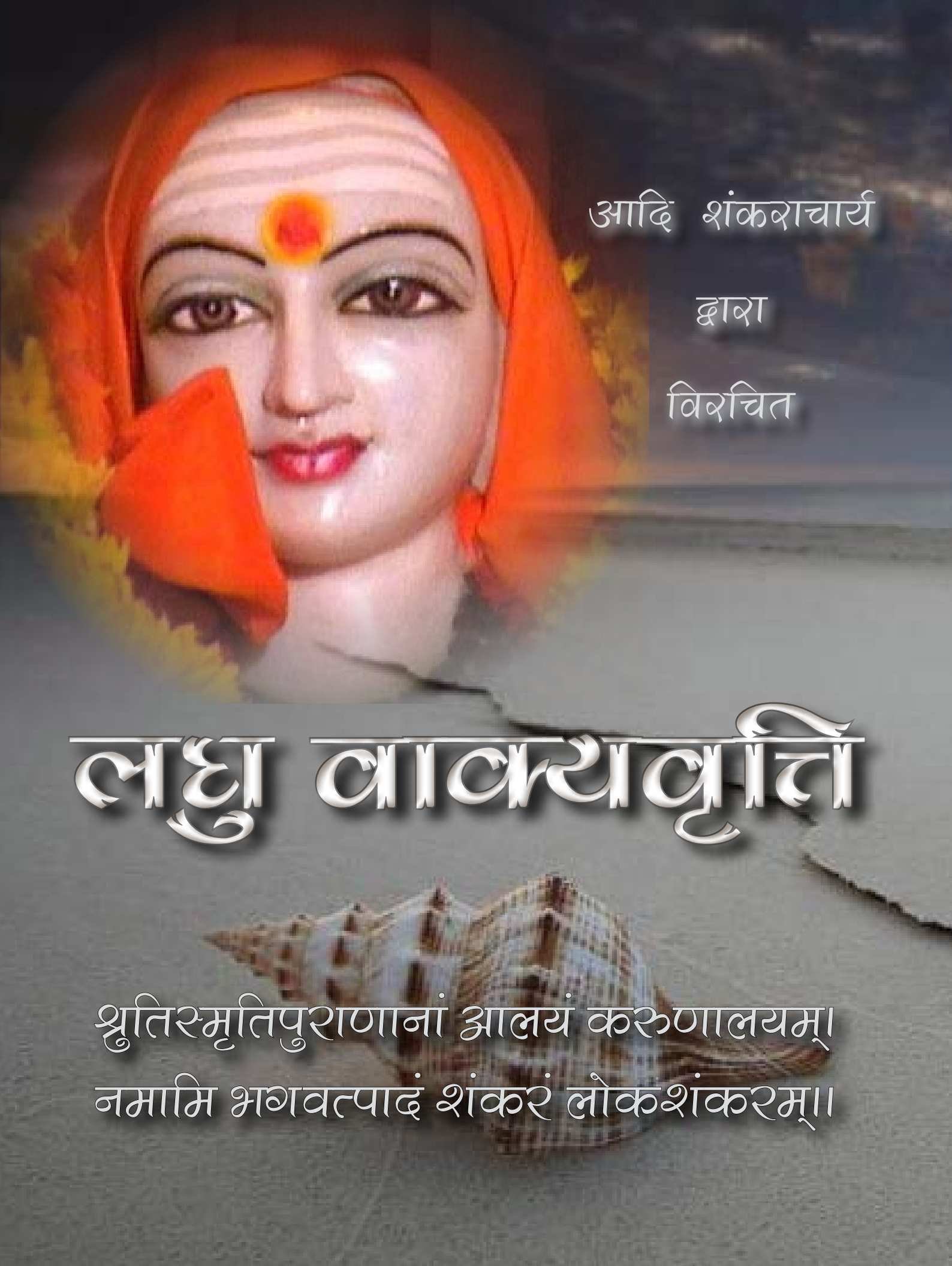

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

लघु वाक्यवृत्ति

श्रुतिस्मृतिपुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

श्लोक – १४

सविकल्पकचिद्योऽहं
ब्रह्मैकं निर्विकल्पकम्।
स्वतः सिद्धा विकल्पास्ते
निरोद्धव्या प्रयत्नतः।।

जो यह सविकल्पक चेतना है, वह अहं पद का वाच्यार्थ जीव है, और जो यह निर्विकल्पक चेतना है, वो अहं पद का लक्ष्यार्थ ब्रह्म है। उस निर्विकल्प ब्रह्म के साक्षात्कार हेतु इन स्वतःसिद्ध विकल्पों के प्रवाह को बलपूर्वक रोकना चाहिए।

लघु वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि 'अहं ब्रह्मास्मि' महावाक्य के द्वारा जीव-ब्रह्म के ऐक्य को ही द्योतित किया गया है। जैसे कि भूमिका में देखा था कि यह ग्रंथ 'अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य पर वृत्तिस्थानीय है। अखण्डार्थ बोधकानि महावाक्यानि। अर्थात् जो अखण्डता के अर्थ को दर्शाते है, वही महावाक्य होते है।

जब वृत्तियों के मध्य में देखना आरम्भ किया तो यह दिखाई दिया कि हम एक चेतना है; जो किसी दृश्यादि के प्रति सचेत होती है, तो उन दृश्यादि को प्रकाशित करनेवाले दृष्टा की तरह भासित होती है। किन्तु जिस समय दो वृत्ति के मध्य में देखा कि जहां किसी भी दृश्यादि के प्रति सभान नहीं है, उस समय तत्-तद् के 'अभाव' को प्रकाशित करनेवाली चेतना की तरह हम विराजमान है।

एवं एक समय हम दृश्य को जाननेवाले दृष्टा की तरह तथा अन्य समय दृश्य के अभाव के प्रकाशक व ज्ञाता बनकर स्थित है। यह हम सदैव किसी न किसी उपाधि अर्थात् विकल्प से युक्त प्रतीत हो रहे है। यह हम सविकल्प चेतना रूप से प्रतीयमान जीव 'अहं' पद का वाच्यार्थ है। वही उनके समक्ष आनेवाले निमित्त के अनुरूप उपाधि को धारण करने वाली सोपाधिक अर्थात् कण्डिशण्ड कान्शियसनेस है। नैमित्तिक होने से उसका दृष्टादि रूप होना वास्तविकता नहीं है।

जब हम दृष्टादि नहीं है, उस समय हमारा होना मात्र है; जिसे हम 'मैं हूं' की तरह जान रहे है। यह मैं हूं की वृत्ति जाग्रत अवस्था में, अन्तःकरण जगने पर स्वतः स्फुरित होती है। अतः इस वृत्ति को विवेकपूर्वक अन्तःकरण अर्थात् अनात्मा का नैमित्तिक अंश जानें। तब जो वृत्तिरहित चेतना की सभानता है वह निर्विकल्प ब्रह्म मैं ही हूं। यही 'अहं ब्रह्मास्मि' महावाक्य का अर्थ है।

इसे जानने के लिए विविध वृत्तियां और उसमें विराजमान जड़ अंश का विवेक करके देखें। समस्त जड़ विकारी, मिथ्यात्व का निश्चय होकर एक मात्र निर्विकल्प चेतनसत्ता की तरह स्थित ब्रह्म में स्थित रहें।

जीव-जंतुओं के संस्कृत नाम

शेर	सिंहः	गाय	धेनुः/गौः	मैना	सारिका
हाथी	गजः	भैंस	महिषी	गौरैया	चटकः
बाघ	व्याघ्रः	बकरी	अजा	बुलबुल	कलापी
भालू	भल्लूकः	भेड़	मेषः	कबूतर	कपोतः
चीता	चित्रकः	सूअर	वराहः/शूकरः	हंस	मरालः
गैंडा	गण्डकः	घोंघा	शम्बूकः	बत्तख	कलहंसः
ऊँट	उष्ट्रः	मेंढक	मण्डूकः	सारस	सारसः
ज़ेब्रा	चित्रगर्दभः	साँप	सर्पः	बगुला	बकः
जिराफ	चित्रोष्ट्रः	अजगर	उलूतः	गरुड़	गरुडः
लोमड़ी	लोमशा	कछुआ	कच्छपः/कूर्मः	बाज	श्येनः
भेड़िया	वृकः	मगरमच्छ	मकरः	गिद्ध	गृध्रः
गीदड़	शृगालः	झींगुर	झिल्लिका	चील	आतायिन्
सियार	शृगालः	बिच्छू	वृश्चिकः	कौआ	काकः
लकड़बग्घा	तरक्षः	केकड़ा	कर्कटकः	कोयल	कोकिलः
हिरन	मृगः/हरिणः	तिलचट्टा	तैलपः	उल्लू	उलूकः
बारहसिंगा	विकटशृंगः	गिरगिट	कृकलासः	टिड्डा	शलभः
नीलगाय	गवयः	छिपकली	पल्ली	जुगनू	खद्योतः
खरगोश	शशकः	जूँ	यूका	मच्छर	मशकः
गिलहरी	चिक्रोडः	चींटी	पिपीलिका	मक्खी	मक्षिका
नेवला	नकुलः	जोंक	जलूका	मधुमक्खी	मधुमक्षिका
घोड़ा	अश्वः	केंचुआ	किञ्चुलुकः	भौंरा	भ्रमरः
गधा	गर्दभः	दीमक	वम्री	बर्र	वरटा
कुत्ता	श्वानः/कुक्कुरः	मकड़ी	तंतुनाभः	बटेर	वर्तकः
बिलाव	बिडालकः	खटमल	मत्कुणः	तीतर	तित्तिरः
बिल्ली	मार्जारी	व्हेल	तिमिः	तितली	चित्रपतङ्गः
बन्दर	वानरः/मर्कटः	मछली	मत्स्यः/मीनः	पपीहा	चातकः
लंगूर	लाङ्गूलिन्	मुर्गा	कुक्कुटः	टिटहरी	टिट्टिभी
चूहा	मूषकः	मुर्गी	कुक्कुटी	चमगादड़	जतुका
साही	शल्यः	मोर	मयूरः	कठफोड़वा	दार्वाघाटः
सांड़	वृषः/वृषभः	तोता	शुकः		

संकलनकर्ता : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली

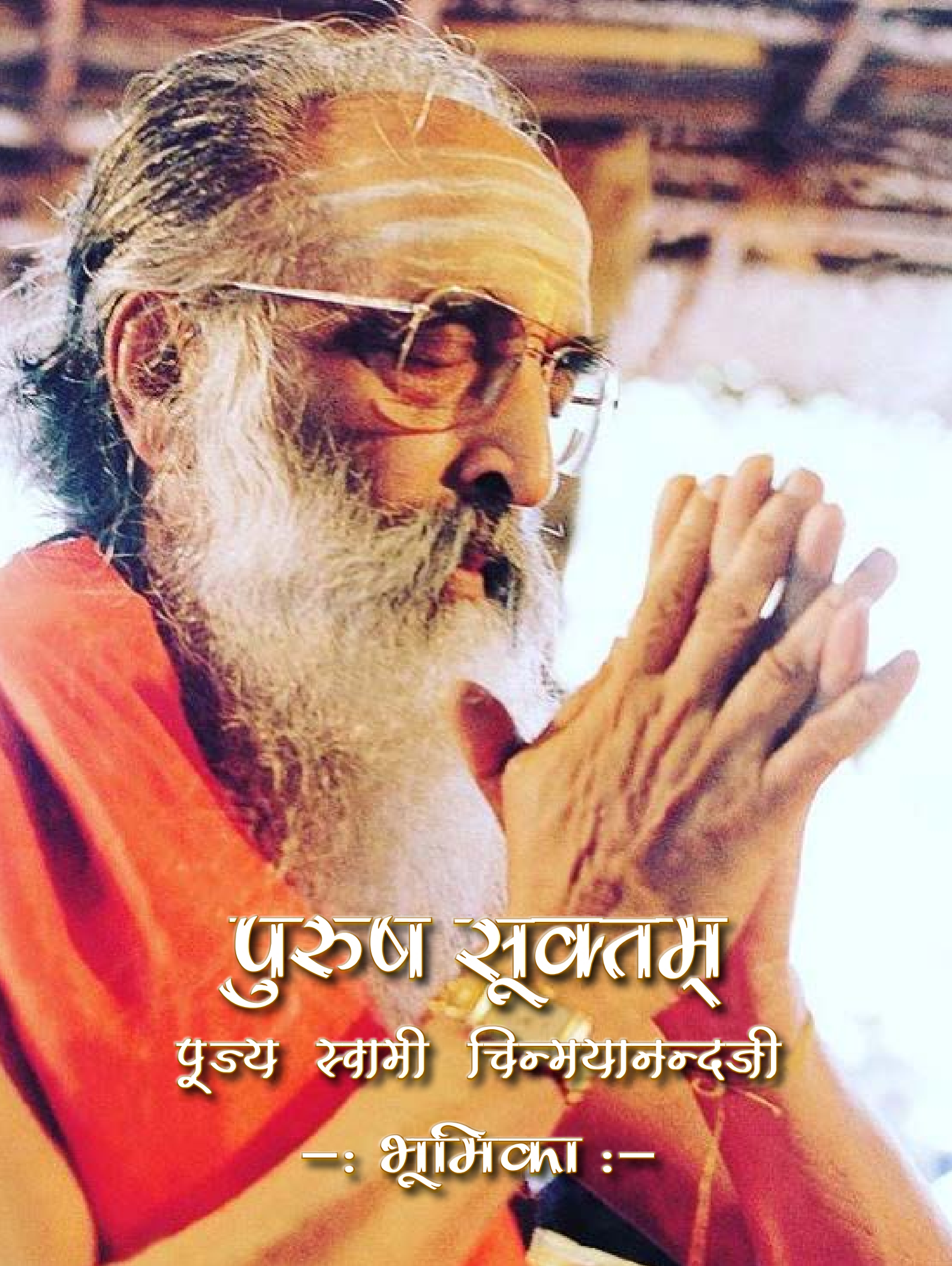

पुरुष सूक्तम्

पूज्य स्वामी चिन्मयानन्दजी

–: भूमिका :–

पुरुष सूक्तम्

वैदिक आचार्यों के अनुसार अंश और पूर्ण में एक घनिष्ठ तादात्म्य है; तथा पिण्ड या व्यक्ति उस ब्रह्माण्ड या विश्व का ही एक बहुत छोटा रूप है। वह अनन्त सत्य ब्रह्म जब अपनी सृजनशक्ति के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त करता है तब वह ईश्वर बनता हैं, और जब वह ईश्वर अपने सृजन की प्रवृत्ति के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करता है तब वह हिरण्यगर्भ कहलाता है और वही हिरण्यगर्भ संसार का प्रक्षेपण करता है। जब वह हिरण्यगर्भ अपनी सृष्टि में प्रक्षेपित वस्तुओं के साथ तादात्म्य जोड़ता है तब वह व्यक्तिगत जीव हो जाता है।

तब कैसे ईश्वर, भगवान, हिरण्यगर्भ होकर जगत का प्रक्षेपण करते है? इस दैवीयज्ञ या महान् त्याग में, वे कौनसी क्रियाएं और अवस्थाएं हैं, जिनसे सृटि इस रूप में निकली? इसे बहुत ही संगीतमय दृष्टि से वेदों ने देखा और गाया है। वही महान् गीत है 'पुरुष सूक्तम्' – विराट दैवीशक्ति का गुणगान। ऐसे तो और भी महिमा स्तोत्र ऋग्वेद में है, पर उनमें यह सर्वाधिक विख्यात है।

इस स्तोत्रगान और इसके गम्भीर अर्थ पर मनन करना अपनी आन्तरिक दृष्टि को व्यक्तिगत विकास में विचित्र अनुभव की विलक्षण उंचाई तक उठाना है। यह आज भी बहुत लोकप्रिय वैदिक गान है और हर एक महत्वपूर्ण अवसरों पर पण्डितों के माध्यम से इसका गान सुन सकते हैं। जिस राग में इस स्तोत्र का गान होता है, वह स्वयं अत्यन्त मनोरंजक है। इन मंत्रों के अर्थ में जो विचार निहित है उनके विशद ज्ञान से ध्यान पूरा होता है। इस पवित्र स्तोत्र के गम्भीर शब्दों द्वारा दर्शित उसकी गहराई तथा लक्षित अर्थों को समझना अपने चित्त को इन कल्पनाओं के पंखों पर उठाना, सृष्टिनाट्यम् के अवर्णनीय दृष्टिक्षेत्र में उड़ान करना है। इस व्यक्त संसार में अनेकानेक सृष्टियां हैं, जो सभी अनन्त

पुरुष सूक्तम्

ब्रह्म से दैवी शक्ति द्वारा पहले अव्यक्त और बाद में पूर्ण व्यक्त रूप में निकले। यह ज्ञान स्वत:स्फुर्त होता है, सृष्टि का अण्डा मानों टूटता है और उसके अन्दर से स्पन्दित पिण्ड इस संसार के विभिन्न जीव और वस्तुओं का अत्यन्त सुन्दर रूप धारण करता हैं। विषय के इस उच्च कलात्मक प्रस्तुतीकरण में अनादि नाटक का गम्भीर सौन्दर्य है।

इस नाटक के दृश्यों को उनके सभी दैवी सौन्दर्य और कुरूपताओं के साथ ध्यानपूर्वक देखने का अर्थ है, अपने दिमाग का पूर्ण विस्तार करना जिससे मन शीशे की तरह निर्मल होता है और अबाधित तहों की गन्दगी और धूल मानो साफ हो जाती है। अहंभाव क्षीण होकर, स्वार्थ समाप्त हो जाता है, दृष्टि साफ हो जाती है और साधक के मन को एक सन्तुलन, आन्तरिक संगीतमय शान्ति के साथ, अनुशासनबद्ध करता है। इस तरह का प्रशान्त मन हृदयान्तर में तीव्रता से प्रवेश कर परं सत्य अर्थात् ब्रह्म को ढूंढता है और अन्त में उसका अनुभव करता है।

पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्दजी द्वारा लिखित इस सूक्त पर की व्याख्या को आगे के अंक से प्रसारित की जाएगी। मूलरूप से यह अंगेजी में है, किन्तु उसका हिन्दी में किसी विद्वान् द्वारा किया गया अनुवाद प्राप्त है।

श्री राधा के प्रेमोद्गार

सदा सोचती रहती हूं, मैं क्या दूं तुमको? जीवनधन?
जो धन देना तुम्हें चाहती, तुम ही हो वह मेरा धन।।

जीवनमुक्त

- 30 -

उत्तरकाशी

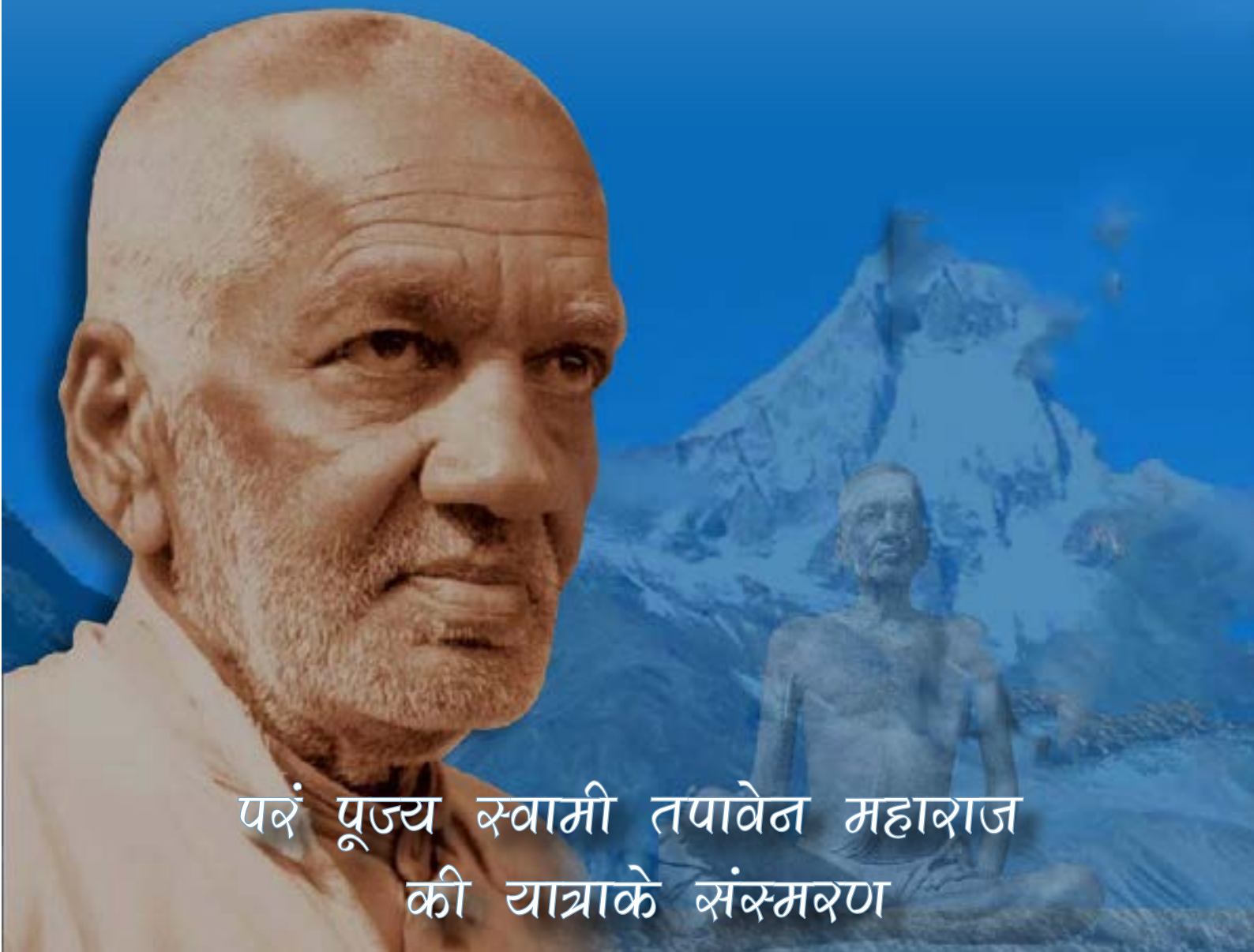

परं पूज्य स्वामी तपोवेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

कपिलाश्रम से एक मील से ज्यादा फिर उपर चढ जाने पर वहा उत्तरकाशी की पश्चिमी सीमा पर वरुण नामक तीर्थ नदी एक बडी जल धारा के रूपमें उत्तर से दक्षिण की ओर बह रही है। फिर यहा से उपर की ओर एकांत रमणीय एवं पवित्र सौम्यकाशी का आरंभ होता है। लता-गुल्मादि के निकुंजों तथा तरुराजियों की मंजुलता से भरे गिरि शिखरों, और चावल गेहूँ आदि के खेतों से भरे गिरि नितंबों के बीच के मार्ग से होकर धीरे धीरे तीन मील आगे बढिएं। लीजिएं, दाई ओर विशाल पुलिन राशियों तथा गोलाकार पाषाण समूहों के बीचों-बीच भागीरथी द्रुतगति से बहती चली जा रही है। वह देखिए, सामने अति पुरातन देवदारु तरुओं से आवृत श्रीविश्वनाथ का मंदिर वारणावत पर्वत की तराई के मैदान के बीच में विराजमान है। यह मन्दिर श्रद्धालुओं की आँखों में अश्रु और शरीर में पुलक उत्पन्न करता है। उधर उसके पास ही उत्तरकाशी के अधिष्ठाता जमदग्नि पुत्र परशुराम का मंदिर शोभायमान है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री शत्रुघ्न चरित्र

— 02 —

रिपुसूदन पद कमल नमामी।
सूर सुसील भरत अनुगामी।।

श्री शत्रुघ्न चरित्र

मानस में श्री भरत को प्रभु राम की छाया के रूप में प्रस्तुत किया गया है, तो शत्रुघ्नजी को भरतजी की छाया के रूप में। केवल एक ही ऐसा प्रसंग है कि जहां पर प्रेममूर्ति भरत से भिन्न आचरण करते हुए प्रतीत होते हैं। वह है मन्थरा पर उनके द्वारा किया जाने वाला प्रहार। उनका यह व्यवहार अन्याय के प्रति लक्ष्मण के आक्रोश की याद दिलाने वाला है। सम्भवत: इसीलिए महाकवि ने उस प्रसंग में 'लखन लघुभाई' के रूप में ही उनका स्मरण करना उचित समझा है।

श्री भरत की दया के साथ शत्रुघ्न के द्वारा दिया जाने वाला दण्ड सामाजिक मर्यादा में सन्तुलन का परिचायक है। अनर्थ करने वाला दण्ड के अभाव में और भी अधिक प्रोत्साहन प्राप्त करता है। अयोध्या में घटित होने वाली सारी दुर्घटनाओं के मूल में मन्थरा की कुटिल प्रकृति ही कार्य कर रही थी। उसने जिस महान् अनर्थ की सृष्टि की उसके लिए किसी प्रकार का पश्चात्ताप भी उनके हृदय में नहीं था। जब सारी अयोध्या अनाथ की भांति विलख रही थी, प्रजा शोक-सन्तप्त थी, राजमहल महाराज श्री रामभद्र के अभाव में भूत-भवन सा प्रतीत हो रहा था, उस समय मन्थरा का आचरण सारी सामाजिक मान्यताओं के प्रतिकूल था। भरत के ननिहाल के आगमन का समाचार सुनकर वह बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण धारण करके आती है, क्योंकि उसे यह पूर्ण विश्वास था कि उसने भरत को उत्तराधिकारी बनाकर इतना बड़ा कार्य किया है जिससे उसे पुरस्कार और सम्मान से लाद दिया जाएगा। इस प्रकार की क्रूर हृदया नारी किस प्रकार के व्यवहार की अधिकारिणी थी? नि:संकोच रूप में कहे तो वह प्राणदण्ड की ही पात्र थी। शत्रुघ्न के द्वारा दिया जाने वाला दण्ड तो प्रतीकात्मक मात्र था।

दण्डित होने पर भी मन्थरा अपनी कुटिलता का परित्याग नहीं करती। प्रकार के क्षणों में भी उसके मुख से जो वाक्य निकलता है, वह उसकी घृणित मनोवृत्ति पर ही प्रकाश डालता है। उस समय भी वह कह उठती है कि, 'हे देव! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है, जो अच्छा करते हुए उसका बुरा परिणाम प्राप्त हो रहा है।'

पौराणिक गाथा

गयासुर

गयासुर

पुराणों के अनुसार गया में एक असुर हुआ, जिसका नाम था गयासुर। असुर कुल में पैदा होने के बावजूद भी बहुत अच्छी प्रवृत्ति का और धर्मपरायण था। वह किसी भी कार्य में लोकहित को ध्यान रखता था। एक बार उसने ब्रह्माजी की आराधना की। ब्रह्माजी प्रसन्न होने पर उसने यह वरदान मांग लिया कि जो भी मुझे देखे, या मुझे स्पर्श करें तो उसे नरक में नहीं जाना पडेगा किन्तु वैकुण्ठ की प्राप्ति होगी। यह वरदान में उपर से सबके प्रति हित और करुणा की भावना प्रतीत हो रही थी। किन्तु उसका बहुत बडा दुष्प्रभाव हुआ कि कोई भी पापी हो या पुण्यात्मा, सब विष्णुलोक जाने लगे। किसी को भी अपने गलत कर्म के फल भुगतने का भय नहीं रहा। इससे सृष्टि में अव्यवस्था होने लगी।

यह देखकर सभी देवता ब्रह्माजी के पास पहुंचे और बताया कि, 'प्रभु! आपके दिए वरदान से सृष्टि में अव्यवस्था होने लगी है। किसीको भी अब अपने दुष्कृत्यों का फल भोगने का भय नहीं रहा। अतः उसका कुछ उपाय किजीएं। तब ब्रह्माजी ने पूरी वस्तुस्थिति को समझा और गयासुर के पास पहुंचें और उनसे कहा कि, ' गयासुर! तुम परं पवित्र हो, तुम्हारे हर कार्य सदैव सब के प्रति करुणा से प्रेरित होकर, सब के हित की कामना से होता है। इसलिए देवता चाहते हैं कि हम तुम्हारी पीठ पर यज्ञ करें।

गयासुर इसके लिए तैयार हो गया। उनकी पीठ पर सभी देवता और गदा धारण करके भगवान विष्णु स्थित हो गएं। गयासुर के शरीर को स्थिर करने हेतु उनकी पीठ पर एक बड़ी शिला रख दी गई। यह शिला आज प्रेत शिला कहलाती है। गयासुर के इस समर्पण और त्याग से भगवान विष्णु अत्यन्त प्रसन्न

गयासुर

हुएं और उन्हें वरदान दिया कि अब से यह स्थान कि जहां तुम्हारे शरीर पर यज्ञ हुआ है यह गया के नाम से जाना जाएगा। यहां पर पिण्डदान और श्राद्ध करने वाले को पुण्य तथा पिण्डदान प्राप्त करनेवाली मृतात्मा अथवा जीवित को अन्य शरीर धारण करने के लिए भटकना नहीं पडेगा, उसे तत्काल अपने कर्म और वासना के अनुरूप लोक और गति प्राप्त हो जाएगी।

महात्मा वो होता है जो तीर्थाणि तीर्थीकृर्वन्ति। जिसके कारण कोई भी स्थान तीर्थ बन जाता है। गयासुर एक असुर होते हुए भी पुण्यात्मा व महात्मा था, उसकी महान सोच और लोकहित की भावना की वजह से आज उसका नाम और स्थान एक तीर्थ की तरह जाना जाता है। अतः यह सत्य है कि व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता है किन्तु अपनी सोच और कर्म से महान होता है।

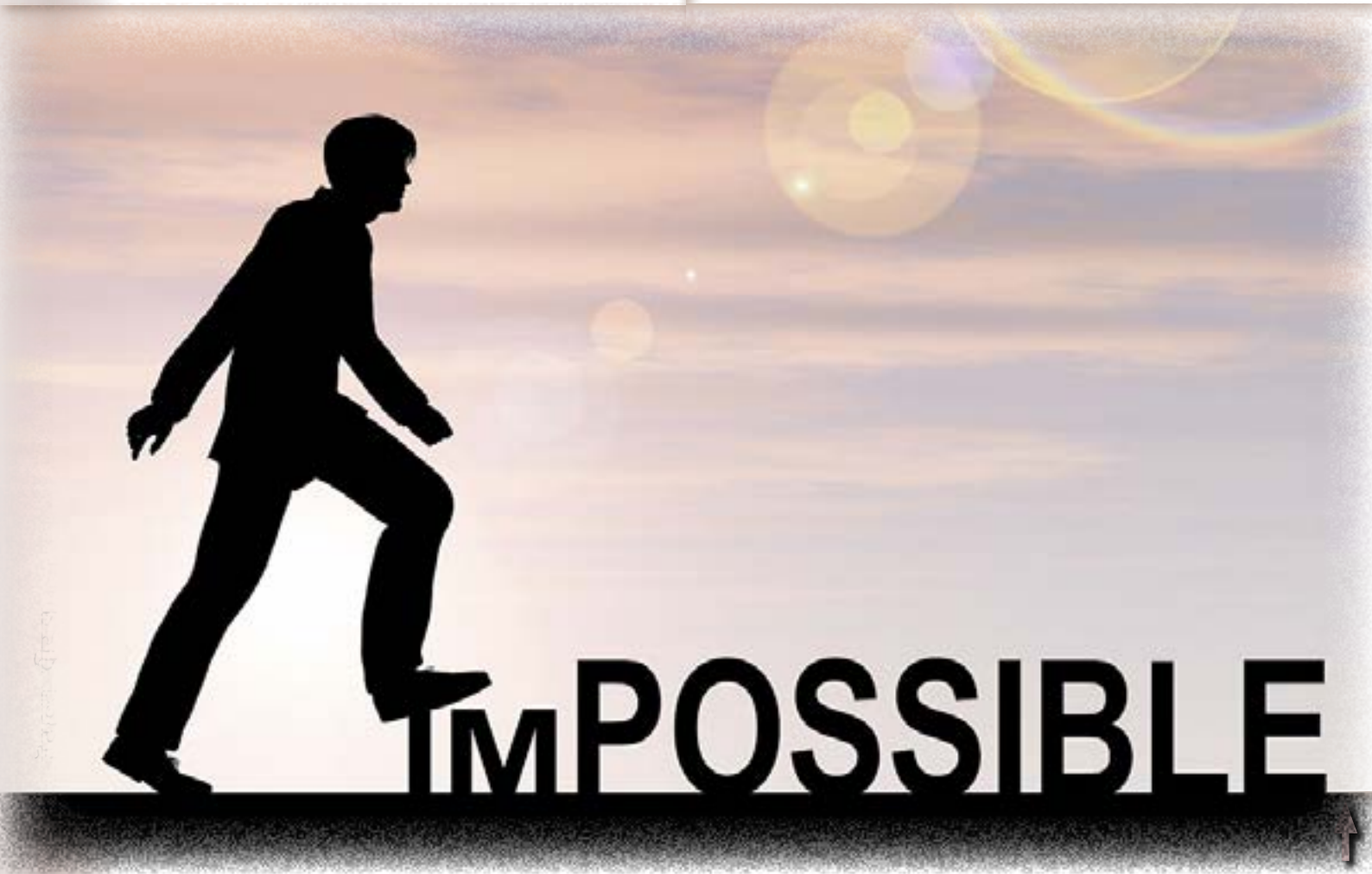

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम समाचार

स्वामी असंगानन्दजी के द्वारा शिवपूजन

आश्रम समाचार

जन्मदिन के आशीर्वाद - ८ जनवरी

आश्रम समाचार

धन्यता की अभिव्यक्ति

आश्रम समाचार

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा:

आश्रम समाचार

गृहस्थाश्रम के ४० वर्ष

आश्रम समाचार

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः

आश्रम समाचार

सुनिल गर्ग को जन्मदिन के शुभाशीष

आश्रम समाचार

केरल से राजेश का आगमन

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी का मोतिबिन्द का आपरेशन

आश्रम समाचार

मकरसंक्रान्ति पर्व

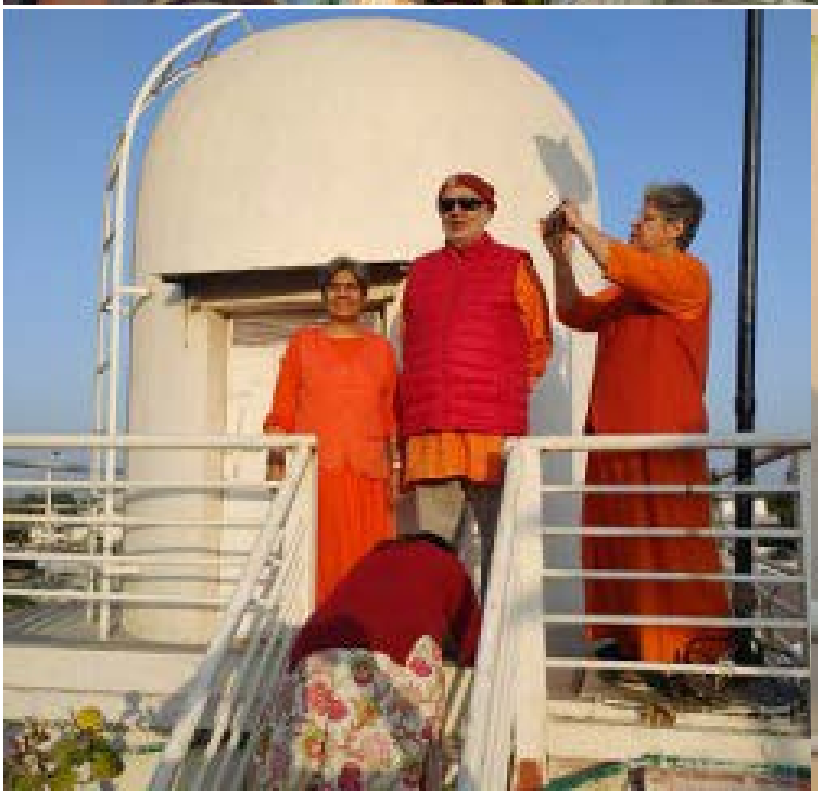

आश्रम समाचार

श्री सूर्याय नमः

आश्रम समाचार

मकरसंक्रान्ति का भण्डारा

आश्रम समाचार

जन्मदिन भेंट

आश्रम समाचार

आवागमन

आगम-अपायिनः ध्रुवं जगतः सत्यम्

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

वेदान्त शिविर (महाशिवरात्री)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी एवं आश्रम महात्माओं के द्वारा

13 से 17 फरवरी 2023

नाटक दीप (पंचदशी अध्याय : 10)

पूजा- अभिषेक, ध्यान, गीतापाठ, संस्कृत आदि

18 फरवरी - महाशिवरात्री उत्सव

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

गीता ज्ञान यज्ञ

जलगांव

स्वामिनी पूर्णानन्दजी के द्वारा

14 से 20 मार्च 2023

गीता ज्ञान यज्ञ

औरंगाबाद

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी के द्वारा

25 मार्च से 1 अप्रैल 2023

INTERNET NEWS

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

~ Sundar Kand Pravachan

~ Prerak Kahaniya

~ Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Kathopanishad Pravachan

~ Shiva Mahimna Pravachan

~ Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu
(Sw. Amitananda in Guj)

~ Gita Ch. 5
(Sw. Amitananda in Guj)

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

~ Vedanta Sandesh - Feb '23

~ Vedanta Piyush - Jan '23

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Published by:
Vedanta Ashram, Indore

Editor:
Swamini Amitananda Saraswati